B.M.E.B.R. Vol. VIII, No. 3-4 pp. 200-204

चिकित्सा में औषध द्रव्यों के संग्रह एवं संरक्षण की उपादेयता

मायाराम उनियाल[1] एवं रूप कुमार इस्सर[2]

प्रस्तुत आलेख में यह स्पष्ट किया गया है कि चिकित्सा में औषध द्रव्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रामाणिक औषध द्रव्यों में बहुकल्पं बहुगुणं-सम्पन्नं योग्ययौषधम्—इन चार गुणों का होना आवश्यक है। उपरोक्त औषध द्रव्यों की गुणकारिता तभी सम्भव है यदि प्रशस्तदेश में उत्पन्न, प्रशस्तकाल में संग्रहीत, अविकारी एवं ऋतु के अनुसार संग्रह की गई औषध द्रव्य रोगनिवारण में समर्थ है। लेख में औषध द्रव्यों के देश, काल एवं संरक्षण विधि पर विचार किया गया है तथा यह भी स्पष्ट किया गया है कि औषध द्रव्यों के संग्रह में नक्षत्र में औषध द्रव्य का संग्रह करना चाहिए इसका भी उल्लेख स्पष्ट किया गया है।

1. अनुसंधान अधिकारी (आयु.), केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, पंजाबी बाग, नई दिल्ली।
2. अनुसंधान अधिकारी (भेषज), केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद, मुख्यालय, नई दिल्ली।